अध्यात्मरामायणमें भगवन्नाम-महिमा

(श्रीकैलासजी त्रिपाठी)

भगवान्‌का नाम, रूप, लीला तथा धाम—ये चारों सच्चिदानन्द हैं। इनमें भी भगवन्नाम प्रथम स्थानपर परिगणित है। भगवन्नामके अवलम्बनसे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षसहित पञ्चम पुरुषार्थरूप भगवत्प्रेमकी प्राप्ति सहज ही हो जाती है। जिसने 'हरि' इन दो अक्षरोंका उच्चारण कर लिया उसने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेदका अध्ययन कर लिया—'**ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः। अधीतास्तेन येनोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयम्॥**' भगवन्नामको पुराण और श्रुतियोंका सार कहा गया है। '*अति पावन पुरान श्रुति सारा।*' उसी भगवन्नामकी महिमासे ओत-प्रोत 'अध्यात्मरामायण' अति पावन ग्रन्थ है। रामचरितकी यह अध्यात्मपरक गाथा ब्रह्माण्डपुराणमें उत्तरखण्डके अन्तर्गत पठित है। अस्तु, इसके रचयिता महामुनि वेदव्यासजी ही हैं। इस रामचरितगाथाको भगवान् शङ्करने अपनी प्रेयसी आदिशक्ति श्रीपार्वतीको सुनाया है—

आलोड्याखिलवेदराशिमसकृद्यत्तारकं ब्रह्म त-
द्रामो विष्णुरहस्यमूर्तिरिति यो विज्ञाय भूतेश्वरः।
उद्धृत्याखिलसारसङ्ग्रहमिदं संक्षेपतः प्रस्फुटं
श्रीरामस्य निगूढतत्त्वमखिलं प्राह प्रियायै भवः॥

(युद्धका० १६। ४९)

अर्थात् भूतनाथ भगवान् शङ्करने बारम्बार समस्त वेदराशिका मन्थन करके यह निश्चय किया कि तारकमन्त्र 'राम' विष्णु भगवान्‌की गुप्त मूर्ति है। अतः उन्होंने समस्त वेदोंके सारका संग्रहरूप यह भगवान् रामका सम्पूर्ण गुप्त तत्त्व अपनी प्रिया श्रीपार्वतीजीको संक्षेपमें सुनाया।

उपर्युक्त उद्धरणसे स्पष्ट है कि अध्यात्मरामायण भगवन्नामसे आप्लावित है। अध्यात्मरामायणमें आये भगवन्नाम-महिमासम्बन्धी कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं—

(१) भगवान् शङ्कर नामामृतके प्रेमी— अध्यात्मरामायणके बालकाण्डमें देवी अहल्या भगवान् रामके समक्ष भगवन्नाम-महिमाकी ओर संकेत करते हुए अपने उद्गार इस प्रकार व्यक्त करती हैं—

यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यं
यन्नाभिपङ्कजभवः कमलासनश्च।
यन्नामसाररसिको भगवान्पुरारि-
स्तं रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि॥

(५। ४७)

जिनके चरणकमलोंकी रजको श्रुतियाँ भी ढूँढ़ती रहती हैं, जिनकी नाभिसे उत्पन्न हुए कमलद्वारा ब्रह्माजी प्रकट हुए हैं तथा जिनके नामामृतके रसिक भगवान् शङ्कर हैं, उन श्रीरामचन्द्रजीका मैं अपने हृदयमें अहर्निश ध्यान करती हूँ।

यहाँपर अहल्याके माध्यमसे भगवान् शङ्करको नामामृतका रसिक बताया गया है।

(२) भगवन्नामके आश्रयसे दुःख और शोकसे मुक्ति— जानकीजीके पाणिग्रहणके अवसरपर श्रीरामजीकी शरण ग्रहण करते हुए मिथिलापति महाराज जनक कहते हैं—

यन्नामकीर्तनपरा जितदुःखशोका
देवास्तमेव शरणं सततं प्रपद्ये॥

(बालका० ६। ७५)

जिनके नाम-कीर्तनमें लगे रहकर देवगण दुःख और शोकको जीत लेते हैं, उन आपकी मैं निरन्तर शरण ग्रहण करता हूँ।

यहाँ स्पष्ट संदेश है कि भगवन्नामका आश्रय लेकर हम दुःख और शोकको जीत सकते हैं।

(३) कलियुगमें कल्याणका एकमात्र साधन भगवन्नाम— श्रीरामके वनगमनके अवसरपर व्याकुल समाजको समझाते हुए श्रीवामदेवजी कहते हैं—

राम रामेति ये नित्यं जपन्ति मनुजा भुवि।
तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन॥
का पुनस्तस्य रामस्य दुःखशङ्का महात्मनः।
रामनाम्नैव मुक्तिः स्यात्कलौ नान्येन केनचित्॥

(अयो० का० ५। २६-२७)

संसारमें जो लोग नित्यप्रति राम-राम जपा करते हैं उन्हें किसी समय मृत्युके भय आदि नहीं होते। फिर उन महात्मा रामके लिये तो दुःखकी शंका कैसे हो सकती है? कलियुगमें तो एकमात्र राम-नामसे ही मुक्ति हो सकती है और किसी उपायसे नहीं।

यहाँ भगवन्नामके सम्बन्धमें दो बातें कही हैं—१. भगवन्नाम अभयप्रदाता है और २-कलियुगमें एकमात्र भगवन्नाम ही कल्याणका साधन है।

(४) नाम-स्मरणसे अन्तःकरणकी निर्मलता—वनवासी श्रीराम वाल्मीकिजीके आश्रमपर पहुँचकर उनसे अपने रहनेहेतु स्थान पूछते हैं। तब वाल्मीकिजी भगवान्‌के रहनेके अन्यान्य स्थान बताते हुए यह भी कहते हैं—

त्वन्नामकीर्त्या हतकल्मषाणां
सीतासमेतस्य गृहं हृदब्जे॥

(अयो० का० ६। ६३)

आपके नाम-संकीर्तनसे जिनके पाप नष्ट हो गये हैं, उनके हृदयकमलमें सीतासहित आपका निवासगृह है।

यहाँ भगवन्नामके सम्बन्धमें यह भाव स्पष्ट है कि नाम-स्मरणसे पाप नष्ट हो जानेपर निर्मल हृदयमें आत्मस्वरूप श्रीभगवान्‌की स्वानुभूति प्राप्त होती है।

(५) नामकी महिमा अवर्णनीय—वाल्मीकिजी भगवन्नाम-महिमाके संदर्भमें भगवान् रामसे स्वानुभवयुक्त उद्गार प्रकट करते हुए इस प्रकार कहते हैं—

राम त्वन्नाममहिमा वर्ण्यते केन वा कथम्।
यत्प्रभावादहं राम ब्रह्मर्षित्वमवाप्तवान्॥

(अयो०का० ६। ६४)

हे राम! जिसके प्रभावसे मैंने ब्रह्मर्षिपद प्राप्त किया है आपके उस नामकी महिमाका कोई किस प्रकार वर्णन कर सकता है।

इतना कहकर वाल्मीकिजी आत्मकथा इस प्रकार बतलाते हैं कि पूर्वकालमें मैं किरातोंके साथ रहकर शूद्रोंके आचरणमें रत था। केवल जन्ममात्रकी द्विजातीयतायुक्त मुझ अजितेन्द्रियद्वारा शूद्राके गर्भसे बहुत-से पुत्र उत्पन्न हुए। चोरोंके सङ्गसे मैं भी चोर हो गया। एक दिन घोर वनमें सप्तर्षियोंको जाते देख उनके वस्त्रादि छीननेकी इच्छासे 'रुको-रुको' कहकर मैं उनके पीछे दौड़ा। तब मुनीश्वरोंने मेरा अभिप्राय जानकर निर्भयतापूर्वक कहा कि एक बार अपने कुटुम्बियोंसे जाकर पूछो कि मैं प्रतिदिन जो पाप सञ्चित करता हूँ, उसके आपलोग भी भागी होंगे या नहीं? परंतु कुटुम्बियोंद्वारा पापभोगमें सहभागितासे मना कर दिये जानेपर मेरे मनमें प्रबल वैराग्य हो गया। तब मुनीश्वरोंकी शरण आनेपर उन्होंने आपके नामाक्षरोंको उलटा करके मुझसे कहा कि तू इसी स्थानपर रहकर एकाग्रचित्त हो हमारे आनेतक 'मरा-मरा' जपो। हे राम! इस प्रकार आपके नामके प्रभावसे मैं आज सीता और लक्ष्मणसहित आपको देख रहा हूँ। मैं निस्संदेह मुक्त हो गया।

(६) भगवन्नामसे विमुखोंको ही माया घेरती है—जब भगवान् श्रीराम सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रमपर पहुँचे तब सुतीक्ष्ण मुनि भगवन्नाम-महिमासम्बन्धी अपने मनोभाव इस प्रकार व्यक्त करते हैं—

त्वं सर्वभूतहृदयेषु कृतालयोऽपि
त्वन्मन्त्रजाप्यविमुखेषु तनोषि मायाम्।
त्वन्मन्त्रसाधनपरेष्वपयाति माया
सेवानुरूपफलदोऽसि यथा महीपः॥

(अरण्यका० २। २९)

आप समस्त प्राणियोंके हृदयमें विराजमान हैं तथापि जो लोग आपके मन्त्रजपसे विमुख हैं उन्हें आप अपनी मायासे मोहित करते हैं और जो उस मन्त्रके जपमें तत्पर हैं उनकी माया दूर हो जाती है। इस प्रकार राजाके समान आप सबको उनकी सेवाके अनुसार फल देनेवाले हैं।

यहाँ स्पष्ट संकेत है कि मायासे वे ही मोहित होते हैं जो भगवन्नामसे विमुख हैं।

(७) भगवन्नाम-जपके सभी अधिकारी—मायामृग मारीचको भगवान् श्रीरामके द्वारा मारे जानेपर देवगण भगवन्नाम-महिमाके सम्बन्धमें परस्पर इस प्रकार कहते हैं—

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
त्यजन्कलेवरं रामं स्मृत्वा याति परं पदम्॥

(अरण्यका० ७। २४)

अर्थात् जो श्रीरामका स्मरण करते हुए शरीर छोड़ते हैं वे ब्राह्मण हों या राक्षस, पापी हों या धार्मिक, परम पदको ही प्राप्त होते हैं।

(८) एक क्षणके नाम-जपसे समस्त पातकोंसे मुक्ति—सुग्रीव भगवान् श्रीरामकी स्तुतिके अनन्तर भगवन्नाम-महिमाकी अभिव्यक्ति इस प्रकार करते हैं—

राम रामेति यद्वाणी मधुरं गायति क्षणम्।
स ब्रह्महा सुरापो वा मुच्यते सर्वपातकैः॥

(किष्किं०का० १। ८४)

जिसकी वाणी एक क्षण भी राम-राम ऐसा सुमधुर

गान करती है वह ब्रह्मघाती अथवा मद्यपी भी क्यों न हो, समस्त पापोंसे छूट जाता है।

(९) नाम-स्मरणसे परम पदकी प्राप्ति—सम्पाती समुद्रतटपर वानरोंसे अत्यन्त दृढ़तापूर्वक भगवन्नाम-महिमाका उद्घोष करते हुए कहता है—

यन्नामस्मृतिमात्रतोऽपरिमितं संसारवारांनिधिं
तीर्त्वा गच्छति दुर्जनोऽपि परमं विष्णोः पदं शाश्वतम्।
तस्यैव स्थितिकारिणस्त्रिजगतां रामस्य भक्ताः प्रिया
यूयं किं न समुद्रमात्रतरणे शक्ताः कथं वानराः॥
(किष्किं०का० ८।५५)

हे वानरगण! जिनके नामके स्मरणमात्रसे बड़े दुष्टजन भी इस अपार संसार-सागरको पार करके भगवान् विष्णुके सनातन परम पदको प्राप्त कर लेते हैं, आपलोग तो त्रिलोकीकी स्थिति करनेवाले उन्हीं भगवान् रामके प्रिय भक्तगण हैं। फिर इस क्षुद्र समुद्रको पार करनेमें क्यों न समर्थ होंगे?

(१०) मृत्युकालीन भगवन्नामकी महिमा—बाली मृत्युके समय श्रीरामसे भगवन्नाम-महिमासम्बन्धी अपने विचार इस प्रकार अभिव्यक्त करता है—

यन्नाम विवशो गृह्णन् म्रियमाणः परं पदम्।
याति साक्षात्स एवाद्य मुमूर्षोर्मे पुरः स्थितः॥
(किष्किं० का० २।६७)

मरते समय विवश होकर भी जिनका नाम लेनेसे पुरुष परम पद प्राप्त कर लेता है वही आप आज इस अन्तिम घड़ीपर साक्षात् मेरे सामने विराजमान हैं।

महादेवजी पार्वतीजीको रामचरित सुनाते हुए कहते हैं कि समुद्र लाँघनेको उद्यत हनुमान्जी भगवन्नाम-महिमाके सम्बन्धमें इस प्रकार बोले—

प्राणप्रयाणसमये यस्य नाम सकृत्स्मरन्॥
नरस्तीर्त्वा भवाम्भोधिमपारं याति तत्पदम्।
किं पुनस्तस्य दूतोऽहं तदङ्गाङ्गुलिमुद्रिकः॥
(सुन्दरका० १।४-५)

प्राण-प्रयाणके समय जिनके नामका एक बार स्मरण करनेसे ही मनुष्य अपार संसार-सागरको पारकर उनके परम धामको चला जाता है, फिर मैं उन्हींका दूत उनके अवयवरूप अँगुलीकी अँगूठी लिये उन्हींका ध्यान करते हुए समुद्रको लाँघ जाऊँ तो इसमें कौन-सी बड़ी बात है?

(११) नाम-जपसे समस्त बन्धनोंसे मुक्ति—मेघनादद्वारा हनुमान्जीको ब्रह्मपाशमें बाँध लिये जानेपर स्वयं व्यासजी भगवन्नाम-महिमाके सम्बन्धमें कहते हैं—

यस्य नाम सततं जपन्ति ये-
ऽज्ञानकर्मकृतबन्धनं क्षणात्।
सद्य एव परिमुच्य तत्पदं
यान्ति कोटिरविभासुरं शिवम्॥
तस्यैव रामस्य पदाम्बुजं सदा
हृत्पद्ममध्ये सुनिधाय मारुतिः।
सदैव निर्मुक्तसमस्तबन्धनः
किं तस्य पाशैरितरैश्च बन्धनैः॥
(सुन्दरका० ३।९९-१००)

अर्थात् जिनके नामका निरन्तर जप करनेवाले भक्तजन एक क्षणमें ही अज्ञानकृत बन्धनको काटकर करोड़ों सूर्योंके समान प्रकाशमान उनके परम कल्याणमय पदको तत्काल प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं भगवान् रामके चरण-कमलोंको सदा अपने हृदयकमलमें धारण करनेसे हनुमान्जी समस्त बन्धनोंसे छूटे हुए हैं। उनका ब्रह्मपाश अथवा और किसी बन्धनसे क्या हो सकता है?

इसी प्रकार हनुमान्जीकी पूँछमें अग्नि लगाये जानेकी घटनाके सन्दर्भमें व्यासजीकी अभिव्यक्ति है—

यन्नामसंस्मरणधूतसमस्तपापा-
स्तापत्रयानलमपीहि तरन्ति सद्यः।
तस्यैव किं रघुवरस्य विशिष्टदूतः
सन्तप्यते कथमसौ प्रकृतानलेन॥
(सुन्दरका० ४।४७)

जिनके नाम-स्मरणसे मनुष्य समस्त पापोंसे छूटकर तुरंत ही तापत्रयरूप अग्निको पार कर जाते हैं, उन्हीं श्रीरघुनाथजीके विशिष्ट दूतको यह प्राकृत अग्नि भला किस प्रकार ताप पहुँचा सकती थी?

(१२) भगवद्भजनसे परमधामकी प्राप्ति—कुम्भकर्ण रावणको समझाते हुए भगवान्के नामकी महिमा इस प्रकार कहता है—

रामं भजन्ति निपुणा मनसा वचसानिशम्।
अनायासेन संसारं तीर्त्वा यान्ति हरेः पदम्॥
(युद्धका० ७।६९)

जो लोग दिन-रात मन और वचनसे भगवान् रामका

भली प्रकार भजन करते हैं, वे बिना प्रयास ही संसारको पारकर श्रीहरिके परमधामको जाते हैं।

(१३) **भगवत्-सम्बन्धसे संसार गोष्पदतुल्य**—भगवान् रामद्वारा कुम्भकर्णके मारे जानेपर नारदजी भगवान्‌की स्तुति करते हुए कहते हैं—

✓ त्वन्नाम स्मरतां नित्यं त्वद्रूपमपि मानसे॥
त्वत्पूजानिरतानां ते कथामृतपरात्मनाम्।
त्वद्भक्तसङ्गिनां राम संसारो गोष्पदायते॥

(युद्धका० ८। ४६-४७)

जो लोग आपका नाम-स्मरण करते हुए रूपका हृदयमें ध्यान करते हैं, आपकी पूजामें तत्पर रहते हैं, आपके कथामृतका पान करते रहते हैं तथा आपके भक्तोंका सङ्ग करते हैं उनके लिये यह संसार गायके पदके समान हो जाता है।

(१४) **नाम-जप करनेवालेको माया नहीं भासती**—रावणके मरणोपरान्त देवगण भगवान् रामकी स्तुति करते हुए भगवन्नाम-महिमाकी अभिव्यक्ति इस प्रकार करते हैं—

त्वन्मायासंवृतानां त्वं भासि मानुषविग्रहः।
त्वन्नाम स्मरतां राम सदा भासि चिदात्मकः॥

(युद्धका० १३। ७)

हे राम! जो लोग आपकी मायासे आच्छादित हैं उन्हें आप मनुष्यरूप प्रतीत होते हैं किंतु जो आपका नाम स्मरण करते हैं उन्हें तो आप सर्वदा चैतन्यस्वरूप ही भासते हैं।

(१५) **भगवान् शङ्करद्वारा तारक ब्रह्म 'राम' नाममन्त्रका उपदेश**—भगवान् शङ्कर श्रीरामकी स्तुतिके अनन्तर भगवन्नाम-महिमाके सम्बन्धमें इस प्रकार कहते हैं—

✓ अहं भवन्नाम गृणन्कृतार्थो
वसामि काश्यामनिशं भवान्या।
मुमूर्षमाणस्य विमुक्तयेऽहं
दिशामि मन्त्रं तव राम नाम॥

(युद्धका० १५। ६२)

प्रभो! आपके नामोच्चारणसे कृतार्थ होकर मैं अहर्निश पार्वतीसहित काशीमें रहता हूँ और वहाँ मरणासन्न पुरुषोंको उनके मोक्षके लिये आपके तारक मन्त्र राम-नामका उपदेश करता हूँ।

(१६) **श्रीहनुमान्‌जीका नाम-प्रेम**—अध्यात्मरामायणके युद्धकाण्डमें हनुमान्‌जीकी भगवन्नामप्रियताका एक सुन्दर प्रकरण आया है। रामराज्याभिषेकके समय करबद्ध खड़े हुए हनुमान्‌जीसे उनकी भक्तिके कारण अत्यन्त प्रसन्न होकर भगवान् रामने कहा—हनुमन्! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, तुम्हें जिस वरकी इच्छा हो माँग लो। तब हनुमान्‌जीने अत्यन्त हर्षित होकर उनसे कहा—

✓ **त्वन्नाम स्मरतो राम न तृप्यति मनो मम॥**
अतस्त्वन्नाम सततं स्मरन् स्थास्यामि भूतले।
यावत्स्थास्यति ते नाम लोके तावत्कलेवरम्॥

(१६। १२-१३)

हे श्रीरामजी! आपका नाम-स्मरण करते हुए मेरा चित्त तृप्त नहीं होता। अतः मैं निरन्तर आपका नाम-स्मरण करता हुआ पृथ्वीपर रहूँ। जबतक संसारमें आपका नाम रहे तबतक मेरा शरीर भी रहे। इसपर श्रीरामजीने कहा—तुम जीवन्मुक्त होकर संसारमें सुखपूर्वक रहो।

(१७) **भगवन्नामप्रेमीको सान्तानिक लोककी प्राप्ति**—अध्यात्मरामायणके अन्तमें आया है कि इस धराधामको छोड़कर स्वधाम जानेके समय श्रीरामने ब्रह्माजीसे कहा कि ये अयोध्यावासी एवं अन्य प्राणी—सब मेरे भक्त और मुझमें प्रीति रखनेवाले हैं। ये सभी मेरे साथ स्वर्गलोक जाना चाहते हैं। मेरी आज्ञासे आप शीघ्र वहाँ इनका प्रवेश करा दें। भगवान्‌के ये वचन सुनकर ब्रह्माजीने कहा—भगवन्! ये महापुण्यशाली लोग मेरे लोकसे भी ऊपर अत्यन्त दीप्तिशाली और विचित्र भोगोंसे सम्पन्न सान्तानिक लोकोंको प्राप्त हों। पुनः वे इस प्रकार कहने लगे—

✓ ये चापि ते राम पवित्रनाम
गृणन्ति मर्त्या लयकाल एव।
अज्ञानतो वापि भजन्तु लोकां-
स्तानेव योगैरपि चाधिगम्यान्॥

(९। ६३)

हे श्रीराम! और भी जो लोग मरनेके समय आपका पवित्र नाम लेंगे अथवा जो भूलकर भी आपका भजन करेंगे वे भी योगियोंको प्राप्त होनेयोग्य उन्हीं लोकोंको जायँगे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्पूर्ण अध्यात्मरामायण भगवन्नाम-महिमासे परिपूर्ण है।
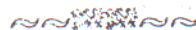
सेष सहस्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥
सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी ॥
महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना ॥

सो०—प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा ॥
बंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥
रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे ॥
सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद ॥
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की ॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक ॥
राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक ॥

दो०—गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ १८ ॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

दो०—बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो०—एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥ २० ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ॥
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें ॥
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

दो०—राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा ॥

जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥
दो०—सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥ २२ ॥
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी ॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥
दो०—निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥ २३ ॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी ॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ॥
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन ॥

निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥
दो०—सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥ २४ ॥
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ ॥
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे ॥
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं ॥
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें ॥
दो०—ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥ २५ ॥

मासपारायण, पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी ॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू ॥
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई ॥
दो०—नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥ २६ ॥
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका ॥

बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला ॥
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता ॥
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दो०—राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥ २७ ॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्रामनर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिनमति मोतें ॥

दो०—सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु।
उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥ २८ (क) ॥
हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥ २८ (ख) ॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी ॥

समुझि सहम मोहि अपडर अपनें। सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें ॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥
कहत नसाइ होइ हियँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की ॥
रहति न प्रभु चित चूक किए की। करत सुरति सय बार हिए की ॥
जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली ॥
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी ॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुबीर बखाने ॥

दो०—प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान ॥ २९ (क) ॥
राम निकाईं रावरी है सबही को नीक।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥ २९ (ख) ॥
एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ॥ २९ (ग) ॥

जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी ॥
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥
सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥
ते श्रोता बकता समसीला। सवँदरसी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना ॥
औरउ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना ॥

दो०—मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥ ३० (क) ॥
श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़ ॥ ३० (ख) ॥

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीहरेरामभजन

सभी रसायन हम करी नहीं नाम सम कोय।
रंचक घटमें संचरे सब तन कञ्चन होय॥
जब ही नाम हृदय धर्यो भयो पापको नास।
मानौ चिनगी अग्निकी परी पुराने घास॥
जागनसे सोवन भला जो कोइ जाने सोय।
अन्तर लव लागी रहै सहजे सुमिरन होय॥
लेनेको हरि नाम है देनेको अन्न दान।
तरनेको आधीनता डूबनको अभिमान॥

मन फुरनासे रहित कर जाही विधिसे होय।
चहै भगति चहै ध्यान कर चहै ज्ञानसे खोय॥
केशव केशव कूकिये ना कूकिये असार।
रात दिवसके कूकते कबहुँ तो सुनै पुकार॥
आज कहै मैं कल भजूँ काल कहै फिर काल।
आज कालके करत ही औसर जासी चाल॥
काल भजन्ता आज भज आज भजन्ता अब्ब।
पलमें परलय होयगी फेर भजेगा कब्ब॥
इस औसर चेता नहीं पशु ज्यों पाली देह।
राम नाम जाना नहीं अन्त परी मुख खेह॥

उज्ज्वल पहिरे कापड़ा पान सुपारी खाय।
एकहि हरिके नाम बिनु बाँधा जमपुर जाय॥
जप तप संयम साधना सब सुमिरनके माँहि।
कबिरा जानै राम जन सुमिरन सम कछु नाहिं॥
राजा राना राव रँक बड़ा जो सुमरे राम।
कह कबीर बन्दा बड़ा जो सुमरे निष्काम॥
सुमरनसे मन लाइये जैसे दीप पतङ्ग।
प्राण तजै छिन एकमें जरत न मोरै अङ्ग॥
चिन्ता तो हरि नामकी और न चितवै दास।
जो कछु चितवै नाम बिनु सोई कालकी फाँस॥

सहजै हि धुनि लगि रही कह कबीर घट माँहिं।
हिरदय हरि हरि होत है मुखकी हाजत नाहिं॥
अजपा सुमरन घट बिषय दीन्हा सिरजनहार।
ताही सो मन लगि रहा कहै कबीर बिचार॥
राम नामको सुमर ले हँसि कै भावै खीज।
उलटा सुलटा ऊपजै ज्यों खेतनमें बीज॥
साँस सुफल सोइ जानिये हरि सुमिरनमें जाय।
और साँस यों ही गये करि करि बहुत उपाय॥
जाकी पूँजी साँस है छिन आवे छिन जाय।
ताको ऐसो चाहिये रहै राम लौ लाय॥

कथा कीरतन कलि बिषे भवसागरकी नाव।
कह कबीर या जगतमें नाहीं और उपाव॥
देह धरेका फल यही भज मन कृष्णमुरार।
मनुषजनमकी मौज यह मिलै न बारम्बार॥
कृष्णनाम गुन गुप्तधन पावै हरिजन संत।
करे नहीं जो कामना दिन-दिन होय अनन्त॥
महिमा माधव नामकी किन्हे न पाया पार।
विधि हर शारद शेष सुर नारद सनतकुमार॥
अब नर मनमें चेत कर काया कच्चा कोट।
जम तोड़ैगे पलकमें ना कछु इसके ओट॥

धन विद्या गुन आयु बल यह न बड़प्पन देत।
नारायण सोई बड़ा जाका हरि सों हेत॥
नारायण हरिभजनमें तूँ जिन देर लगाय।
का जाने या देरमें श्वासा रहे कि जाय॥
नारायण बिनु बोधके पण्डित पशू समान।
तासो अति मूरख भला जो सुमरे भगवान॥
विद्या वित्त स्वरूप गुण सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरि भक्ति बिनु यह सब ही है रोग॥
सन्त सभा झाँकी नहीं किया न हरि गुन गान।
नारायण फिर कौन बिध तू चाहत कल्यान॥

साधन यज्ञ अनेकसे सरै न एको काम।
बिना भक्ति भगवन्तके जिउ न लहै विश्राम॥
ग्रन्थ पन्थ सब जगतके बात बतावत तीन।
राम हृदय, मनमें दया तन सेवामें लीन॥
तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र किये दान।
मन पवित्र हरि भजनतें होत त्रिविध कल्यान॥
सकल रैन सोवत गई उग्या चहै अब भान।
अब भी भज भगवानको जो चाहै कल्यान॥
मन मगरूरी त्यागकर रटिये कृष्ण मुरार।
नौका बीच समुद्रके होय भजनसे पार॥

* मनहर कवित्त *

घरी घरी घटत छीजत जात छिन-छिन
भीजत हि गलि जात माटीको सो ढेल है,
मुकुतिके द्वार आइ सावधान क्यों न होइ
बेर-बेर चढ़त न तियाको सो तेल है।
करि ले सुकृति हरि भजि ले अखण्ड नर
याहीमें अन्तर परै यामे ब्रह्म मेल है,
मानुष जनम यह जीत भावै हार अब
सुन्दर कहत यामें जुवाको सो खेल है॥

राम नाम जाना नहीं पाला सकल कुटुम्ब।
धन्धे ही में पचि मरा बार भई नहिं बुम्ब॥
पाँच पहर धन्धे गया तीन पहर रहा सोय।
एक पहर हरि ना जप्या मुक्ति कहाँ ते होय॥
धूमधाममें दिन गया सोचत हो गयी साँझ।
एक घरी हरि ना भज्या जननी जनि भइ बाँझ॥
कबिरा यह तन जात है सकै तो ठौर लगाय।
कै सेवा कर साधुकी कै गोविन्द गुन गाय॥
दुनियाँ सेती दोसती होय भजनमें भङ्ग।
एका एकी रामसे कै साधुनके सङ्ग॥

कबिरा सब जग निर्धना धनवन्ता नहिं कोय।
धनवन्ता सोइ जानिये जाहि नाम धन होय॥
सुखके माथे सिल पड़ो जो नाम हृदयसे जाय।
बलिहारी वा दुःखकी जो पल-पल नाम जपाय॥
सुमरनकी सुध यों करो ज्यों सुरभी सुत माँहि।
कह कबीर चारो चरत बिसरत कबहूँ नाहिं॥
सुमरन सों मन लाइये जैसे कीड़ा भृङ्ग।
कबिर बिसारे आपको होय जाय तिहि रङ्ग॥
सुमरन सुरत लगायकर मुखते कछू न बोल।
बाहरके पट देय कर अन्तरके पट खोल॥

कहा भरोसो देहको बिनसि जात छिन माँहि।
साँस-साँस सुमरन करो और यतन कछु नाहिं॥
जीवन थोरा ही भला जो हरि सुमरन होय।
लाख बरसका जीवना लेखे धरै न कोय॥
कहता हूँ कहि जात हूँ सुनता है सब कोय।
सुमरनसों भल होयगा नातर भला न होय॥
कबिरा सूता क्या करै जागो जपो मुरारि।
एक दिना है सोवना लंबे पाँव पसारि॥
कबिरा मुख सो हीं भलो जा मुख निकसै राम।
जा मुख राम न नीकसै सो मुख है किस काम॥

कबिरा हरिके नाममें बात चलावे और।
तिस अपराधी जीवको तीन लोक कित ठौर॥
राम नामको सुमरते उधरे पतित अनेक।
कह कबीर नहिं छाड़िये राम नामकी टेक॥
राम नामको सुमरते अधम तरै संसार।
अजामिल गनिका स्वपच सदना सबरी नार॥
बाहर क्या दिखराइये अन्तर जपिये राम।
कहा काज संसारसे तुझे धनीसे काम॥
रग रग बोले रामजी रोम रोम रङ्कार।
सहजै ही धुनि होत है सो ही सुमिरन सार॥

नारायण सुख भोगमें मस्त सभी संसार।
कोउ मस्त वा मौजमें देखो आँख पसार॥
दो बातनको भूल मत जो चाहत कल्यान।
नारायण इक मौतको दूजे श्रीभगवान॥
सन्त जगतमें सो सुखी मैं मेरीका त्याग।
नारायण गोविन्द पद दृढ़ राखत अनुराग॥
नारायण हरि लगनमें यह पाँचो न सुहात।
विषय भोग निद्रा हँसी जगत प्रीत बहु बात॥
सेवाको दोनों भले एक सन्त इक राम।
राम जु दाता मुक्तिके सन्त जपावें नाम॥

आया था कछु लाभको खोय चल्या सब मूल।
फिर जाओगे सेठ पाँ पलै पड़ैगी धूल॥
ज्यूँ तीरथ मेला मँडा मिला आय संयोग।
आप आपने जायँगे सभी बटाऊ लोग॥
परनिन्दा परद्रोहमें दिया जनम सब खोय।
कृष्ण नाम सुमरा नहीं तिरना किस बिध होय॥
धन जौबन यों जायँगे जा बिधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज क्यों चाटै जगधूर॥
नारायण सतसङ्ग कर सीख भजनकी रीत।
काम क्रोध मद लोभमें गयी आर्बल बीत॥

किरीट सवैया

पाइ अमोलक देह यहै नर क्यूँ न बिचार करै दिल अन्दर
कामहु क्रोधहु लोभहु मोहहु लूटत है दसहू दिसि द्वन्दर।
तूँ अब बांछत है सुरलोकहि कालहु पाइ परैं सु पुरन्दर
छाँड़ि कुबुद्धि सुबुद्धि हृदै धरि आतमराम भजै किन सुन्दर॥

मत्तगजेन्द्र सवैया

ग्रीव त्वचा कटि है लटकी कच हूँ पलटे अजहूँ रत वामी
दन्त गये मुखके उखरे नखरे न गये सु खरो खर कामी।
कम्पत देह सनेह सुदम्पति संपति जंपति है निसि जामी
सुन्दर अंतहु भौन तज्यो न भज्यो भगवंत सु लौन हरामी॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम॥
राम नाम जपते रहो जब लगि घटमें प्रान।
कबहुँ तो दीनदयालुके भनक परैगी कान॥
एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास।
स्वाति सलिल हरि नाम है चातक तुलसीदास॥
पढ़ पढ़के सब जग मुवा पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमके पढ़ै सो पण्डित होय॥
हाथी घोड़े धन घना चन्द्रमुखी बहु नार।
नाम बिना यमलोकमें पावत दुःख अपार॥

भोर कि साँझ घरी पल माँझ सु काल अचानक आइ गहैगो
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुन्दर यों पछताइ रहैगो ॥
सोइ रह्यो कहाँ गाफिल ह्वै करि तो सिर ऊपर काल दहारै
धामस-धूमस लागि रह्यो सठ आइ अचानक तोहिं पछारै ।
ज्यों वनमें मृग कूदत फाँदत चित्र गले नखसूँ उर फारै
सुन्दर काल डरै जिनके डर ता प्रभुको कहु क्यों न सँभारै ॥
संत सदा उपदेश बतावत केस सबै सिर सेत भये हैं
तूँ ममता अजहूँ नहिं छाँड़त मौतहु आइ सँदेस दये हैं ।
आज कि काल चलै उठि मूरख तेरेहि देखत केते गये हैं
सुन्दर क्यों नहि राम सम्हारत या जगमें कहु कौन रये हैं ॥

कौन कुबुद्धि भई घट अंदर तूँ अपने प्रभुसों मन चोरै
भूलि गयो विषयासुखमें सठ लालच लागि रयो अति थोरै।
ज्यों कोउ कंचन छार मिलावत ले करि पत्थरसों नग फोरै
सुन्दर या नरदेह अमोलक तीर लगी नउका कत बोरै॥
देह सनेह न छाड़त है नर जानत है थिर है यह देहा
छीजत जात घटै दिन ही दिन दीसत है घटको नित छेहा।
काल अचानक आइ गहे कर ढाइ गिराइ करै तनु खेहा
सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरंजन सो कर नेहा॥
तूँ कछु और बिचारत है नर तेरो बिचार धर्‌योहि रहैगो
कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिखो तितनोहि लहैगो।